III. ॥ ५ [क्री॒ला] ॥१॥ ११ ॥२॥ ७ [सीरं॑ च मे॒ लय॑श्च मे॒ सूश्च॑ मे प्र॒-
सूश्च॑ मे] ॥३॥ ८ ॥४॥२०॥ ॥

IV. ॥ ९ ॥१॥ ६ [सु॒गं च॑ मे॒ शय॑नं] ॥२॥ १० ॥३॥ १२ ॥४॥२४॥ ॥

V. ॥ १३ [सीसं॑ च मे॒ त्रपु॑ च मे श्या॒मं च॑ मे लो॒हं च॑ मे] ॥१॥ १४ ॥२॥
१५ [यामं॑श्च मऽइ॒त्या] ॥३॥२७॥ ॥

VI. ॥ १६-१८ ॥१-३॥३०॥ ॥

VII. ॥ १९-२३ [संवत्स॒रश्च॑ मे॒ तप॑श्च मेऽह्नो॰] ॥१-५॥३५॥ ॥

VIII. ॥ २४-२७ ॥१-४॥३९॥ ॥

IX. ॥ २८ - प्र॒जाप॑तये॒ स्वाहा॑ ॥१॥ इ॒यं - ॰त्याय ॥२॥ २९ - ॰मा॒त्मा य॒-
ज्ञेन॑ कल्पतां पृ॒ष्ठं य॒ज्ञेन॑ कल्पतां ब्र॒ह्मा य॒ज्ञेन॑ कल्पतां य॒ज्ञो य॒ज्ञेन॑ क-
ल्पतां॒ ज्योति॑र्य॒ज्ञेन॑ कल्पता॒ꣳ स्व॑र्य॒ज्ञेन॑ कल्पताम् ॥३॥ स्तोम॑श्च - वेट्
स्वाहा॑ ॥४॥४२॥ ॥ नवानुवाकेषु त्रयश्चत्वारिंशत् ॥

इति काण्वशाखायां संहितापाठे एकोनविंशोऽध्यायः ॥१९॥

I. ॥ १८, ३० [साविषक्] ॥१॥ ३१ ॥२॥ ३२ [धन॑साताऽइ॒न्द्राव॑तु] ॥३॥
३३ [॰वीरं॑ च॒कार॒ सर्वा॒ आशा॒ वाज॑पतिर्भवेयम्] ॥४॥ ३४ [विश्वा॒ आ-
शा॒ वाज॑पतिर्जयेयम्] ॥५॥ ३५ ॥६॥ ३६. ३७ ॥७॥७॥ ॥

II. ॥ ३८ [ऋ॒ता॒षालृ॒त॰] - ४९ [अहे॑ळमानो] ॥१-१२॥ ५० ॥१३॥२०॥ ॥

III. ॥ ५१ [अ॒ग्निं यु॑नज्मि॒ - तेन॑ गमेम -] ॥१॥ ५२ [प॒क्षाऽअ॒जरौ॑ पत॒त्रि-
णो॒ -] - ५७ ॥२-७॥२७॥ ॥

IV. ॥ ५८ ॥१॥ ५९ [जानीथ] ॥२॥ ६० [कृण्वाव॒या॰] - ६५ ॥३-८॥
६७ b ॥९॥३६॥ ॥

V. ॥ ६८ ॥१॥ ६९ [जघंध (65.)] ॥२॥ ७० ॥३॥ ७१ [तालि॒ह्] ॥४॥